ISSN: 0972 - 2351

मत्स्यगंधा

2006

मात्स्यिकी संपदा और प्रबंधन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोची 682 018

सीपी संपदा : परिरक्षण और प्रबंधन

बी. जेन्नी, पी. एस. अलोश्यस, मात्यू जोसफ और पी. राधाकृष्णन
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोची, केरल

संघ (फाइलम) मोलस्का में आनेवाले सीपी दो कवचवाले बिलकारी जन्तु हैं। भारतीय समुद्र तट के मुहाने और पश्च जलों में बहुमात्रा में ये फैले गए हैं, पाई गई मुख्य जातियाँ, *विल्लोरिटा साइप्रिनोइडे, पाफिया मलबारिका*, *मेरेट्रिक्स कास्टा, मेरेट्रिक्स मेरिट्रिक्स, सुनेटा स्क्रिपटा, अनडोरा ग्रानोसा, मारसिया ओपिमा* हैं। वर्ष 2005 में कुल 70,000 टन सीपी का अवतरण हुआ। सीपी पकड में केरल का प्रथम स्थान है, यथाक्रम आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महराष्ट्र, तमिल नाडु, पोंडिचेरी व गोवा से भी ये पकडे जाते हैं। भारत के वाणिज्य प्रमुख सीपियों की सूची नीचे दी गई है।

राज्य	वाणिज्य प्रमुख सीपी की जाति
केरल	*वी. साइप्रिनोइडस, पी. मलबारिका, एम. कास्टा, एम. मेरिट्रिक्स, एस. स्क्रिप्टा, मारसिया ओपिमा*
कर्नाटक	*विल्लोरिटा साइप्रिनोइड्स, पाफिया मलबारिका, मेरेट्रिक्स कास्टा*
गोवा	*विल्लोरिटा साइप्रिनोइडस, पाफिया मलबारिका, मेरेट्रिक्स कास्टा*
महाराष्ट्र	*पाफिया मलबारिका, मेरट्रिक्स कास्टा, जेलोनिया बंगालेनसिस*
त. नाटु	*पाफिया मलबारिका, मेरट्रिक्स कास्टा,* एम. मेरेट्रिक्स, मार्सिया ऑपिमा
आंध्र प्रदेश	*अनडोरा ग्रानोसा, जेलोइना बंगालेनसिस, मेरेट्रिक्स कास्टा, मेरेट्रिक्स मेरेट्रिकस*

पत्रव्यवहार : बी. जेन्नी शर्मा,
तकनीकी अधिकारी, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोची - 682 018, केरल

भारत ने शीतीकृत सीपी मांस का निर्यात वर्ष 1981 में जापान में करते हुए शुरू किया था। बाद में इन्डोनेशिया, द. आफ्रिका, चीन, न्यूजीलान्ड, थायलान्ड, यू ए ई और यू एस ए में भी करने लगे। 2003-04 के दौरान भारत ने 90, 757 टन सीपी उत्पादों का निर्यात किया। आजकल सीपी से बनाए उत्पाद जैसा सूखा, निर्जलित, हिमशीतिति और डिब्बाबंद सीपी मांस और इस से बनाए अचार का अच्छा निर्यात व्यापार होता है। वर्ष 2002-03 में शीतीकृत मांस का निर्यात बाज़ार में मात्रा व भार यथाक्रम 9.53% व 14.52% घट गया था। इसका कारण निर्यातक देशों द्वारा गुणवत्ता नियंत्रण का पालन करना था।

भारत के पश्चिम तटों से सीपियों का वाणिज्यक विदोहन होता है। केरल में इसके मांस और कवच को अच्छी माँग है। *पी. मलबारिका, पी. स्क्रिप्टा, एम. कास्टा, एम. मेरेट्रिक्स* और खारा पानी सीपी *वी. साइप्रिनोइड* मौजूदा जातियाँ हैं। स्कूप नेट जिसका जालाक्षि आयाम 3 मी. का होता है, से और हस्तचयन से सीपी का संग्रहण किया जाता है। मांस स्थानीय मछुवारों, निर्यातकों को बेचा जाता है। किसी जाति के कवचों को उसके मांस से अधिक आय प्राप्त होता है। कवच का उपयोग चूना उद्योग, कुक्कुट व जलकृषि में मछलियों को खिलाने के लिए

किया जाता है।

भारत में सीपी पालन बहुत कम होता है बल्कि यह अधिकांश पकडा जाता है। *वी. साइप्रिनोइडा, पी. मलबारिका, एस. कास्टा, एम. मेरेट्रिकस, ए. ग्रानोसा* और *एम. ओपिमा* पालन के लिए अनुयोज्य जातियाँ हैं। फिर भी इसका वाणिज्यक पालन शुरू किया नहीं है। पालन के लिए बीजों का चयन प्राकृतिक संस्तरों से या हैचरियों में उत्पादित करते हुए किया जा सकता है। पालन प्रौद्योगिकी बहुत सरल है जिस में बीजों का उचित क्षेत्रों में रोपण करने की रीति अपनाई जाती है। जीवों की चोरी व बहाव रोकने को घेरा बनाना चाहिए। 4 से 12 महीनों में रोपित सीपियों का फसलकाट साध्य है।

सीपियों का अतिविदोहन इसकी प्रभव घटती में परिणत हो सकता है। केरल के चेट्टुआ नामक मुहाने में हुआ अनुभव इसका उत्तम उदाहरण है। वर्ष 2000 से यहाँ सीपी अनुपलब्ध होने लगी। पाँच साल याने 2005 तक यहाँ से सीपी को पकडना बंद कर दिया। इसके बाद में हुए फसलकाट में भरमार सीपियाँ प्राप्त हुई थीं। मिट्टी और चूना केलिए किए जानेवाला खोद और बहिस्रावों से होनेवाले प्रदूषण से भी इनका नाश होता है।

इस संपदा की परिरक्षा के लिए पर्यावरण हितैषी अभिगम की ज़रूरत है। सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रभव वृद्धि के लिए समुद्र रैंचन और खेतीगत परीक्षण चलाए जाते हैं। इनके तरुणों की पकड पर पाबंदी लगाने को जालाक्षि का आकार < 30 मि. मी. सुझाया जाता है। इसके प्रजनन काल में रोक लागू करने से अष्टमुडी कायल से टिकाऊ पकड प्राप्त होती है। अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा परीक्षण करने में विचार कर रहे हैं।

संपदा प्रबंधन

सीपी संपदाओं के टिकाऊपन केलिए प्रबंधन नीतियाँ अनिवार्य है। भारत में इसकेलिए निम्नलिखित दीर्घकालीन प्रबंधन लक्ष्य वाणिज्यक खेतों पर आगे रखा जा सकता है।

दीर्घावधि प्रबंधन लक्ष्य

विज्ञान में

- विविध प्रकार की प्रबंधन रीतियाँ जो प्रभव वृद्धि के लिए आवश्यक है, पर मछुवा समुदायों को समझाना

सांख्यिकी में

- वाणिज्यक सीपी मत्स्यन के लिए किए जाने वाले श्रम जैसे मछुवारों की संख्या, मत्स्यन केलिए लगे दिवस, पकड एकक आदि पर संगत आंकडा तैयार करना
- अवतरण पर आधिकारिक आँकडा का संकलन

मात्स्यिकी प्रबंधन में

- लाइसेंस देने की पद्धति शुरू करना
- लाइसेंस और मौसम के ज़रिए मत्स्यन प्रयास का क्रमीकरण
- वाणिज्य प्रधान जातियों के मत्स्यन श्रम का परिमाणन व प्रलेखीकरण
- संपदा के सदुपयोग पर जागरण

परिरक्षण और संरक्षण में

- प्रत्येक क्षेत्र के मात्स्यिकी विभागों के क्रियाकलापों का परिमाणन
- कार्यकलापों का अनुधावन

आवास प्रबंधन में

- सीपी आवासों में होनेवाला खतरनाक बदलाव, रुकावट या नाश का पहचान
- पर्यावरण हितैषी कार्याक्रमों का प्रोत्साहन
- पर्यनुकूल पालन प्रणालियों का स्वीकरण

मंत्रालय और नीति निमार्ताओं में

- समाकलित संपदा प्रबंधन रीतियों का प्रोत्साहन

- प्रत्येक क्षेत्र के संपदाओं के परिरक्षण के लिए दिशानिर्देश और समन्वय कार्य सुझाना
- मुहानों और तटीय जलों की गुणवत्ता मानदंड वहाँ कार्यरत समूहों की सहकारिता से विकसित और कार्यान्वित करना
- पणधारियों से परामर्श करके नियमों/संशोधनों की लागू

परिरक्षण और प्रबंधन उपाय

स्वास्थ्य सीपी संस्तर स्थानीय लोगों की संपत्ति होने के कारण उसका टिकाऊ परिरक्षण होना चाहिए

परिरक्षण और टिकाऊ मत्स्यन

- मत्स्यन श्रम अनुकूल करते हुए परिरक्षण और सुरक्षा प्रोत्साहित करना
- सामायिक और शुद्ध डॉटा जो कि प्रभव निर्धारण के लिए अत्यावश्यक है इकट्ठा करना
- अवतरण संबंधी सांख्यिकी को आगे रखते हुए वाणिज्यक विदोहन अनुकूल स्तर पर नियंत्रित करना
- आवास सुरक्षा संबंधी पहलुओं के अनुवर्तन से उत्पादन को कायम रखना

वाणिज्यक मात्स्यिकी

- प्रत्येक जातियों के आकार, दिवसीय पकड और मौसमी सूचनाओं से परिरक्षण सुनिश्चित करना।
- वास्तविक अवतरण पर सूचना प्राप्त करना
- लाइसेंस पद्धति से नियंत्रण करना

जलकृषि

- सीपी खेती का वाणिज्यीकरण
- सीपी खेती का प्रचार

मुख्य शब्द/Keywords
संघ/फाइलम - phylum
समुद्र रैंचन - see ranching
मोलस्का - mollusca
द्विक्पाटी/दो कवचवाला प्राणि - bivalve
कवचप्राणी - shell fishes